सफलता की कहानी

पशुधन आधारित कृषि वानिकी में औषधीय वाटिका सृजन का प्राणी स्वास्थ्य रक्षार्थ–एक अनुकरणीय पहल

नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर के आमानाला कृषि वानिकी क्षेत्र में स्थित पशुधन प्रक्षेत्र पर आयुर्वेट प्राईवेट लिमिटेड कम्पनी के अनुबंध व सहयोग से औषधीय वाटिका वर्ष जुलाई–2017 से विकसित की गई है। जिसमें सतावर, मुनगा, भुईआँवला, कालमेघ, बावची, प्रश्नपर्णी, सालपर्णी, तुलसी, बच, ब्राह्मी, मंडूकपर्णी, एलोवेरा, अश्वगन्धा, इस्टीविया, भृंगराज, गिलोय, सफेद सदाबाहार, पत्थरचूर, नीबूघास, तीखुर, आमाहल्दी, पत्थरचट्टा, पुदीना आदि 24 विभिन्न प्रकार की औषधीय फसलें एवं आनोनाम्यूरीकेटा, अर्जुन, नीम, करंज आदि 4 प्रकार के औषधीय पेड़ों का रोपण किया गया है, साथ ही वाटिका के 3 एकड़ क्षेत्र में कमाच फसल की खेती की गई, जिस से

करीब 600 किलो बीज उत्पादन प्राप्त हुआ, जिसमें से 500 किलो बीज आयुर्वेट प्राईवेट लिमिटेड द्वारा 65 रू. प्रतिकिलो के हिसाब से 32,500 रू. में एवं 15 किलो बीज एक कृषक द्वारा 975 रू. में खरीदा गया, जिससे कुल नगद आय 33,475 रू. प्राप्त हुई, इस औषधीय वाटिका को विकसित करने के लिये प्लांटिंग मटेरियल आयुर्वेट प्राईवेट लिमिटेड नई दिल्ली द्वारा निःशुल्क प्रदान किया गया, एवं

विश्वविद्यालय के उपलब्ध संसाधनों से इनका पालन पोषण किया गया। वर्तमान समय में वाटिका में लगभग रू. 2,00,000 कीमत का प्लांटिंग मटेरियल तैयार है, जिसे और विस्तारित करने की योजना है। प्लांटिंग मटेरियल का मूल्य निर्धारण ज.न.कृ.वि.वि. की रेट लिस्ट के आधार पर किया गया है। इसके अलावा तुलसी बावची, कालमेघ, भुईआँवला आदि के बीज वाटिका से प्राप्त हुये है, जिनकी कीमत लगभग 10,000 रू. है। जिन्हें आगामी समय में वाटिका के लिये उपलब्ध क्षेत्र में बोया जायेगा, इसके आय व्यय की गणना निम्नानुसार है।

(अ) आयः–

1. कमाच बीज से नगद आय	–	रू. 33,475=00
2. तैयार प्लांटिंग मटेरियल लगभग	–	रू. 2,00,000=00
3. औषधीय फसलों के बीज	–	रू. 10,000=00
कुल योग	–	रू. 2,43,475=00

(ब) कुल लागतः– 10,000 रू. जो उपकरण खरीदी में व्यय किये गये जिस में फावडे, गैंती, तसले, खुरपी, बका, मेजरिंग टेप, सिंचाई पाइप, प्रूनिंग कैंची, स्केटियर, रस्सी एवं दो बोरी चूना खरीदे गये सारे उपकरण वाटिका के साथ–साथ फार्म के अन्य कार्यो में भी उपयोग किये जा रहे है। जो विश्वविद्यालय के स्टॉक में हैं और पूर्णतः विश्वविद्यालय की सम्पत्ति है। कुल मिला कर वर्तमान समय में खर्चा– 10,000 रू. घटाकर 23,475 रू. शुद्ध नगद आय प्राप्त हुई है एवं रू. 2,10,000 का प्लांटिंग मटेरियल एवं औषधीय फसलों के बीज, विश्वविद्यालय के पास उपलब्ध हैं। इस तरह औषधीय वाटिका विश्वविद्यालय के हित में लाभकारी सिद्व हुई है। साथ ही विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों को भी वाटिका की स्थापना व निरीक्षण से विश्वविद्यालय की शैक्षणिक अनुसंधान एवं विस्तार गतिविधयों में भी वृद्धि हुई है। आगामी समय में औषधीय वाटिका से ज.ने.कृषि

विश्वविद्यालय की तरह औषधीय पौधे तैयार कर विक्रय करने की योजना है। जो आय का एक अच्छा स्त्रोत साबित होगी। पौधे तैयार करने में विश्वविद्यालय द्वारा कोई अतिरिक्त व्यय न करके इससे उपलब्ध आय एवं संसाधनों का ही उपयोग किया जायेगा। औषधीय वाटिका एवं इसकी खेती के संबंध में जानकारी प्राप्त करने के लिये कोई भी इच्छुक व्यक्ति, किसी भी कार्य दिवस में वाटिका का कार्य देख रहे कृषि विशेषज्ञ एवं विश्वविद्यालय के दैनिक वेतन भोगी, कर्मचारी विनोद कुमार शर्मा के मो. नं. 9300130900/8815176162 पर संपर्क कर या स्वयं उपस्थित हो कर इसकी प्रगति, आय–व्यय एवं उन्नत खेती संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकता है। वाटिका से सम्बंधित फोटो गैलरी में संलग्न है। इसी औषधीय वाटिका से प्राप्त प्लांटिंग मटेरियल से विश्वविद्यालय के नवीन प्रशासनिक भवन अधारताल, जबलपुर (म.प्र.) में भी नवीन औधषीय वाटिका का कार्य प्रगति पर है। फिलहाल इस में पुदीना, ब्राह्मी, मंडूकपर्णी, एलोवेरा, बच, लेमन घास, एलोवेरा का रोपण कर दिया गया है, जिसका इच्छुक व्यक्ति द्वारा कभी भी निरीक्षण किया जा सकता है।

<u>औषधीय वाटिका के लाभः–</u>एकीकृत कृषि वानिकी और पशुधन आधारित खेती पद्वति अंर्तगत औषधीय वाटिका को अगर मध्यप्रदेश व देश विभिन्न वानिकी अंचलों में अंगीकृत किया जावे तो न केवल वन संपदा संरक्षित होगी, वरन् यह जनजातीय आदिवासियों, लघु कृषकों की अतिरिक्त आमदनी के स्त्रोत के साथ सभी प्राणीयों के स्वास्थ्य हित में वरदान साबित सिद्व होगी। निःसंदेह नानाजी देशमुख पशुचिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय,

जबलपुर (म.प्र.) द्वारा एक अनुकरणीय अनुबंध एवं विश्वविद्यालय की गतिविधियों की दिशा में उठाया गया एक सृजनात्मक कार्य है, जो प्रशंसनीय है, इसे प्रदेश व केन्द्र सरकार के सहयोग से राष्ट्र ऋषि नानाजी देशमुख के कृषि एवं ग्रामोदय विकास के स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

Dr. Anil Kumar Gour (IPRO)
Nanaji Deshmukh Veterinary Science University, Jabalpur
Mr.Vinod Kumar Sharma
Sr. Agriculture Journalist
Address. 549/1 Suhagi Jabalpur (M.P.)
Mob. 9300130900
Email- vksagindia@gmail.com